“साहित्य अकादमी पुरस्कृत हिंदी उपन्यासों का विश्लेषणात्मक अध्ययन (महिला साहित्यकारों के विशेष संदर्भ में)”

पीएच. डी. उपाधि हेतु प्रस्तुत शोध-प्रबंध

अर्पणा कुमारी

Registration No. TZ201041 of 2019

मानविकी एवं समाज विज्ञान विद्यापीठ

हिंदी विभाग, तेजपुर विश्वविद्यालय

तेजपुर, असम : 784028

मई : 2024

उपसंहार

पितृसत्तात्मक समाज में स्त्रियों का जीवन सदैव संघर्षपूर्ण रहा इसमें कोई दोराय नहीं है| हर क्षेत्र में पुरुष वर्ग का वर्चस्व रहा है| स्त्रियों को दोयम दर्जा प्राप्त था| ऐसे में साहित्य इनसे अछूता कैसे रह सकता था| प्राचीन समय से आधुनिक काल के बीच लेखन के प्रति स्त्रियों की उदासीनता इसी समाज की देन है| कुछ नाम इस बीच में जरूर आये लेकिन चंद गिनती में ही सिमट कर रह गए| हिंदी साहित्य की किसी भी किताब का अध्ययन करके लेखन के क्षेत्र में इनकी उपस्थिति का अंदाजा लगाया जा सकता है| हिंदी साहित्य में भक्तिकाल को स्वर्ण-युग माना गया है पर वहां भी इनकी उपस्थिति न के बराबर की है| एक लम्बे समय अन्तराल के बाद यह इंतजार खत्म हुआ और स्त्रियों ने कलम से जीवन की परिधि को मापना शुरू कर दिया| कलम की भूमिका से स्त्रियों के जीवन को जो स्वर मिला वो अविश्वसनीय था| लेखन के क्षेत्र में मिला यह अवसर किसी क्रांति से कम नहीं था| जैसे-जैसे स्त्रियों ने अपने पंख फैलाये उनका अधिकार क्षेत्र विस्तार पाता चला गया| लेखन के क्षेत्र में बीसवीं शताब्दी वरदान साबित हुई| अब वो अपनी सम्पूर्ण सत्ता में से उन सारे विशेषणों को कहीं बहुत दूर छोड़ चुकी थी जो सुदीर्घ परंपरा की देन थी|

साहित्य रूपी दर्पण में अब एक और प्रतिबिम्ब शामिल हो गया जो था स्त्री लेखन| सारे सपने साकार हो रहे थे स्त्रियाँ भी अब खुलकर लिख रहीं थी| हर असहनीय पीड़ा को उसने शब्द दे दिया था| इस बदलाव में अभी भी कुछ ऐसा था जिससे स्त्रियाँ प्रभावित हो रही थीं| वो था इनकी लेखनी में स्त्री पीड़ा की अधिकता को लेकर उठाए गए सवाल| स्त्री और पुरुष लेखन में तुलना की जाने लगी| जैसे समाज के अन्य क्षेत्रों में की जाती रही है वैसे ही साहित्य लेखन के क्षेत्र में भी यह देखा गया| आलोचकों के अनुसार स्त्री लेखन में समाज की सिर्फ एक समस्या को आधार बनाया जाता है| अन्य पहलुओं पर इनकी पकड़ ढ़ीली बताई जाने लगी| यहाँ दो चीजें ध्यान देने योग्य हैं| एक तो आलोचकों को समग्रता में बात करनी चाहिए| दूसरी यह कि लेखक किस परिवेश में रहा है उनकी शिक्षा कैसी हुई किन परिस्थितियों में रहकर जीवन यापन किया इन सारे

अनुभव को वो अपने लेखन द्वारा अभिव्यक्त करता है न कि लिंग आधार पर| लेखक का अपना एक दृष्टिकोण होता है जिसके माध्यम से वो जीवन और समाज की व्याख्या करता है| स्त्री लेखिकाओं की रचना में स्त्री तत्व की अधिकता का प्रमुख कारण समाज में फैली असमानता और उनके साथ हुए दुर्व्यवहार है| जो दर्द स्त्रियाँ सालों से सहती आ रहीं हैं उसे एक स्त्री जितनी गहराई और गंभीरता के साथ व्यक्त कर सकती है उतना एक पुरुष रचनाकार नहीं कर सकता| स्त्री लेखन के संबंध में ऐसी धारणा बना लेना कि वो सिर्फ स्त्रियों की बातें लिखतीं हैं या सारी लेखिका नारीवादी हैं कहना बेहद बचकाना होगा| कुछ लेखिकाओं ने इसे सहर्ष स्वीकारा है तो कुछ ने इसे एक सिरे से खारिज भी किया है| इस शोध-प्रबंध में चयनित लेखिकाएँ न तो खुद को इस दायरे में देखती हैं और न इनके लेखन से ऐसी कोई धारणा बनती है| साहित्य अकादमी पुरस्कृत महिला रचनाकार के उपन्यासों के विस्तृत विषय क्षेत्र से अंदाजा लगाया जा सकता है|

साहित्य किसी भी समृद्ध समाज का द्योतक होता है, और सम्मान व पुरस्कार लेखक के प्रति प्रकट किया गया आभार| लेकिन, बदलते समय में आज यह सिर्फ प्रतिष्ठा का सूचक मात्र बन कर रह गया है| जिससे इसकी महत्ता दिनों-दिन धूमिल हो रही है| पुरस्कारों का कारोबार भले ही कैसा भी हो अंततः लेखक अपनी कृति से ही जाना जाता है| अब तक के जितने भी महान लेखक हुए उनके जीवन में पुरस्कारों की महत्ता बस इतनी भर है कि उनके पाठक वर्ग में कुछ बढ़ोत्तरी हो जाएगी| साहित्य अकादमी पुरस्कार से सम्मानित लेखिकाओं के लिए भी पुरस्कार की महत्ता पाठक वर्ग में चंद वृद्धि मात्र भर से है| कृष्णा सोबती ने अपने साक्षात्कार में कहा भी है कि ‘शासकों द्वारा दिए गए पुरस्कार से कोई बड़ा नहीं होता|’ नासिरा शर्मा, अलका सरावगी, मृदुला गर्ग इन सबके लिए भी पुरस्कार के मायने एक से ही हैं| अपने अस्तित्व को तलाशती लेखिकाएं आज उस मुकाम पर पहुँच चुकी हैं जहाँ उन्हें खुद को प्रमाणित करने की जरूरत नहीं है|

आधुनिक कथा-साहित्य में आज महिला साहित्यकारों के लेखन से उत्पन्न चेतना, नयी विचारधारा और नयी अवधारणा का प्रवाह देखते ही बनता है| समकालीन समय तक आते-आते लेखिकाओं के लेखन में व्याप्त उन तमाम विषयों को तवज्जो दिया जाने लगा जिसे अब तक आलोचकों के द्वारा नज़र अंदाज किया गया था| यह सच है कि महिला लेखन में स्त्री मुक्ति के स्वर को एक खास स्थान प्राप्त था, जिसकी वजह सामाजिक ढांचा को जाता है| अब तक स्त्रियों के संबंध में जो कुछ भी लिखा जा रहा था वो परानुभूति पर केन्द्रित था| लेकिन महिला कथाकारों के लेखन में आई स्त्रियों की अनुभूतियाँ स्वानुभूति के पैमाने पर आधारित था| जो स्त्रियों के जीवन की गहराई को दिखाने में सक्षम थी| इस प्रकार स्त्री जीवन सन्दर्भ को अपने लेखन का अहम् हिस्सा बनाकर सच्चाई के उन परतों को खोला गया जो अब तक के लेखन में शामिल नहीं था| आज लेखिकाओं के लेखन में जो भी नवीन स्वर दिखलाई पड़ते हैं इनके बीज बहुत पहले बोए जा चुके थे| आधुनिक युग तक आते-आते लेखिकाओं के लेखन में ऐसे कई विषयों ने गति पाई जिसे लेकर यह धारणा बनाई गई थी की यह उनकी परिधि के बाहर आती है|

हिंदी कथा साहित्य में आज प्रतिभा संपन्न लेखिकाओं की एक लम्बी श्रृंखला बनकर तैयार हो गई है| लेखिकाएं अब हिंदी साहित्य में अपने अतुलनीय योगदान के लिए जानी जाने लगीं| इनका लेखन अब उन तमाम पूर्वाग्रहों से मुक्ति पा चुका है, जिससे स्त्रियों के लेखन को समय-समय पर कटघरे में खड़ा कर दिया जाता था| कृष्णा सोबती, मृदुला गर्ग, नासिरा शर्मा, अलका सरावगी, एवं चित्रा मुद्गल जैसी साहित्यकारों की सक्रिय भूमिका से आज साहित्य और मजबूत व समृद्ध हुआ है| हर युग में कुछ ऐसे लेखक हुए जिनकी रचना साहित्य में एक घटना की तरह है| बहुआयामी प्रतिभा से संपन्न ‘कृष्णा सोबती’ का नाम ऐसे ही कथा-साहित्य लेखिका के रूप में लिया जाता है| सत्तर के दशक में इन्होंने एक नयी भूमि तैयार कर ‘मित्रो मरजानी’ लिखा, जिसमें स्त्री पात्र ‘मित्रो’ बोल्ड मानसिकता का परिचायक है| इसी श्रृंखला में एक दूसरा नाम ‘मृदुला गर्ग’ का भी बड़े आदर के साथ लिया जाता है| इसके बाद ‘नासिरा शर्मा’ का नाम उन कथाकारों की

श्रेणी में लिया जाता है जिन्होंने दो विस्तृत समाज को अपने लेखन का आधार बनाया है| नासिरा शर्मा ने हिन्दू और मुसलमान दोनों समाज की समस्याओं की बारीकी को अपने लेखन का हिस्सा बनाया है| साथ ही अपने लेखन में स्त्री चेतना के स्वर को प्रमुखता से दिखाती हैं| 'चित्रा मुद्‌गल' का कथा-साहित्य जीवन की विडंबनाओं एवं विसंगतियों की पड़ताल है| इनके लेखन में जहाँ एक तरफ मानवीय मूल्यों एवं संवेदनाओं का चित्रण किया गया है वहीं दूसरी तरफ नए जमाने की कशमकश भरी जिन्दगी को चित्रित किया है| आधुनिक युग में 'अलका सरावगी' सबसे सशक्त कथाकारों में से एक हैं| इनका लेखन गहरे यथार्थ और मानवीय संवेदनाओं की भूमि पर रचा गया हैं, जिसमें स्त्रियों की समस्याओं को सहजता से लिखा गया है| इन सभी लेखिकाओं के लेखन में विषय की विविधता और नयापन को आज आलोचकों के द्‌वारा खूब सराहा जा रहा है| इस प्रकार लेखन से सन्दर्भ में इस बात को स्वीकार किया गया कि किसी लेखक की कृति उसके स्त्री या पुरुष होने से नहीं बल्कि उसके अनुभव के धरातल पर आधारित होती है|

हिंदी साहित्य के उपन्यास विधा में अब तक कुल तेईस उपन्यासों को साहित्य अकादमी पुरस्कार प्राप्त है जिसमें केवल पांच महिला लेखिका को उनके उपन्यासों पर यह पुरस्कार दिया गया है| इसके पीछे कई कारण होने की संभावना बताई जाती रही है, लेकिन उद्‌देश्य यहाँ यह है कि इन सभी लेखिकाओं के लेखन में वर्णित विभिन्न विषयों को अध्यायों में समझने का प्रयास किया जाए| अलग-अलग लेखिकाओं के द्‌वारा अलग-अलग प्रवृत्ति को आधार बनाकर लिखा गया उपन्यास कई स्तरों पर समान है| इन उपन्यासों का परिवेश अलग है पात्रों की संरचना बहुत अलग है, लेकिन समस्या एवं संवेदना के स्तरों पर एक ही पंक्ति में खड़े दिखलाई पड़ते हैं| पहले अध्याय के अंतर्गत अब तक तेईस उपन्यासकारों एवं उनके उपन्यासों का सामान्य परिचय को दर्शाते हुए उनका विवेचन किया है|

शोध-प्रबंध के दूसरे अध्याय में इन पांचों लेखिकाओं के उपन्यास में व्यक्त युगीन परिस्थिति के विभिन्न पहलुओं (समाज, संस्कृति, राजनीति, धर्म, अर्थ) को दिखाने का प्रयास किया है| ये

सभी उपन्यास भारतीय समाज की पृष्ठभूमि को आधार बना कर रचा गया है जिस वजह से इनमें वर्णित परिवार और मानवीय संबंध एक से हैं| साथ ही सभी उपन्यासों में गाँव और शहर दोनों परिवेश को एक साथ दर्शाया गया| भारत के सभी गाँव और सभी शहर की आदतें कमोबेश एक ही होती हैं| गाँव की मूल प्रकृति शांत और संवेदनशील होती है| गाँव में लोग मिलजुल कर एक साथ परिवार में रहते हैं| एक-दूसरे की समस्या को यहाँ मिलकर हल किया जाता है| 'जिंदगीनामा' उपन्यास में पंजाब के ग्रामीण जीवन का पूरा ब्योरा प्रस्तुत किया गया है| लेकिन शहर का वातावरण इससे काफी अलग हलचल भरा होता है| बाजारवाद के दौर में लोग अर्थ को ज्यादा महत्त्व देते है एक-दूसरे से आगे निकले की होड़ लगी होती है| जिस कारण शहरों में मानवीय प्रकृति का ह्रास भी देखने को मिलता है| सभी उपन्यास अपने-अपने क्षेत्र विशेष को आधार बनाकर लिखा गया जिस कारण इनमें कुछ समानता है तो कुछ भिन्नता भी| किसी उपन्यास में पंजाब क्षेत्र को दिखाया गया है किसी में कोलकाता, किसी की में इलाहाबाद, किसी में दिल्ली तो किसी में मुंबई महानगर को| इसके अतिरिक्त कुछ छोटे-बड़े और कई गाँव और शहर की भी चर्चा की गई है जिसमें सभी क्षेत्रों के रहन-सहन, खान-पान, रीति-रिवाज, पर्व-त्योहार, धर्म के प्रति आदर और आस्था, अंधविश्वास, कानून व्यवस्था, अर्थ की महत्ता को बड़ी सहजता के साथ दर्शाया है| उपन्यासों में वर्णित इन सभी पहलुओं को यहाँ समग्रता में देखने का प्रयास किया है|

आधुनिक समय में नयी विचारधाराओं से लोगों में होसलों का संचार तो हुआ लेकिन अंत में लोग कई समस्याओं से ग्रसित हो गए जिसने मानव समाज को झकझोड़ कर रख दिया| वैश्विक प्रक्रिया ने जिस प्रतिस्पर्धा को जन्म दिया उसने मानव जीवन को कई स्तरों पर संवेदनहीन बना दिया| संबंधों में ऐसी अर्थहीनता लोगों में अजनबियत, घुटन, निराशा और बेचैनी को जन्म देती है जिसको सभी लेखिकाओं ने अपने लेखन का हिस्सा बनाया है| निजीकरण से न सिर्फ शहर प्रभावित हुए हैं बल्कि गाँव तक में इसके असर को महसूस किया गया है| अवसरों की तलाश में लोग अब शहरों में विस्थापित होकर जीवन यापन कर रहे हैं| परिवर्तित समय ने व्यक्ति के स्वप्न

को किस हद तक प्रभावित किया इसका भी जिक्र लेखिकाओं ने किया है| विकास के नाम पर हो रहे अमानवीय घटना से उत्पन्न आत्महत्या जैसी समस्या ने समाज में अपनी गहरी पैठ बना ली है| यह मानव जीवन की सभ्यता पर बहुत बड़ा प्रश्न खड़ा करती है| तीसरे अध्याय में इन्हीं तत्वों पर चर्चा की गई है| जिन भौतिक जरूरतों को ध्यान में रखकर बाजार का अनुसरण किया गया था उसका व्यक्ति पर आज उल्टा असर पड़ गया| उपभोक्तावादी समाज ने आज व्यक्तियों के संबंध को खोखला और बेजान बना दिया है|

पितृसत्तात्मक समाज में स्त्री की लैंगिकता के साथ-साथ उसके श्रम और प्रजनन पर भी पुरुष का नियंत्रण हो जाना सामान्य बात है| घर से लेकर बाहर तक स्त्री के जीवन के तमाम फैसलों पर भी पुरुष की ही पकड़ होती है| स्त्रियों पर नियंत्रण पाने के लिए उसे परंपरा और रीति-रिवाजों की चादर से ढक दिया जाता है, जिससे कि वह कोई सवाल न कर सके| श्रम पर नियंत्रण से स्त्री सबसे ज्यादा कमजोर हो जाती है, इसलिए पुरुष का पहला प्रहार उसे आत्मनिर्भर होने से रोकना है| एक स्त्री जब तक आर्थिक रूप से किसी दूसरे पर निर्भर रहेगी उसकी मुक्ति असंभव है| पितृसत्तात्मक व्यवस्था समाज में किस तरह से काम करती है? उपन्यासों में इसे लेखिकाओं के द्वारा कैसे दर्शाया गया है? इस अध्याय में इन्हीं पहलुओं को ध्यान में रखकर काम किया गया है| ‘जिंदगीनामा’ की सभी ग्रामीण स्त्रियाँ, ‘कलिकथा वाया बाइपास’ की सभी घरलू ग्रामीण और शहरी पात्र, ‘पारिजात’ की सभी शिक्षित एवं सशक्त स्त्री पात्र, ‘मिलजुल मन’ की सभी शिक्षित कामकाजी एवं घरेलू कामकाजी स्त्री पात्र तथा ‘नाला सोपारा’ की घरेलू एवं आत्मनिर्भर स्त्री पात्रों के माध्यम से लेखिकाओं ने समाज की पितृसत्तात्मक व्ययस्था की गहराई में जाकर सत्य पर प्रकाश डाला है| समाज में महिलाओं की दयनीय स्थिति को उनके साथ हो रहे मानसिक और शारीरिक हिंसा के द्वारा समझा जा सकता है| स्त्री शरीर के घाव से शारीरिक हिंसा को तो समझा जा सकता है, लेकिन मानसिक हिंसा में कोई बाह्य निशान नहीं होने से स्त्री की मनोदशा को समझना बेहद मुश्किल होता है| मानसिक हिंसा के तौर पर किसी स्त्री को गाली देना उस पर

अभद्र टिप्पणी करना उनके शरीर के अंगो को गाली की तरह प्रयोग करना आता है| इस प्रकार चौथे अध्याय में स्त्री जीवन से जुड़ी उन समस्त समस्याओं को दिखाने का प्रयास किया है जो उपन्यासों में वर्णित है|

हम जानते हैं कि भाषा हमारे भावों और विचारों की संवाहिका है, और जब इसका प्रयोग बतौर लेखन किया जाता है तो वहां इसके परिष्कृत रूप को देखा जाता है| जिसमें लेखक कई तरह के मिश्रण और प्रयोग करने के बाद अपनी कृति को रचता है| हर लेखक के लेखन में उसके अपने परिवेश, प्रशिक्षण का गहरा प्रभाव होता है जिसे भलीभांति समझा जा सकता है| कृष्णा सोबती के अधिकांश लेखन में पंजाब का चित्रण है| 'जिंदगीनामा' भी विभाजनपूर्व पंजाब के ग्रामीण जीवन-वृत्त की कथा है| ग्रामीण जीवन एकता का प्रतीक माना जाता रहा है| गाँव में हर छोटे-छोटे अवसरों को एक साथ मिलकर मनाने का प्रचलन होता है, जिसका यहाँ लेखिका ने बड़ी खूबसूरती से पंजाबी, उर्दू, हिंदी आदि शब्दों को आपस में लपेटकर वर्णन किया है| ग्रामीण जीवन में एक और प्रचलन है गीत-संगीत का जिसका प्रयोग लेखिका ने मनभर कर किया है| इससे लेखिका के गीत, काव्य के प्रति निकटता को भी महसूस किया गया है| उपन्यास में ऐसे कई तरह के लोक प्रचलित काव्य/गीत के संगम को देखा गया है| अलका सरावगी साठोत्तरी लेखिकाओं में एक महत्त्वपूर्ण नाम है| इनके साहित्य में इनकी आधार भूमि कलकत्ता की झांकियाँ सहज ही आती है| कलकत्ता शहर की गहराई में जाकर उसे शब्द दिया है| इन्होंने अपने लेखन से आधुनिक समय में व्याप्त हर समस्याओं को सामने रखती हैं| इनके साहित्य में संवेदना पक्ष का महत्त्व ज्यादा प्रभावकारी दिखता है, इससे इनके साहित्य की एक अलग पहचान है| इनके उपन्यास में भी कई भाषाओं का प्रयोग हुआ है| आधुनिक समय में बोली जाने वाली सामान्य हिंदी जिसमें अंग्रेजी की मिलावट की सहजता को भी दर्शाती हैं| नासिरा शर्मा अपने उपन्यास में पात्रों के द्वारा भाव को समझाने के लिए जिन शब्दों का प्रयोग किया है उसमें कहीं क्षेत्रीयता का पुट है तो कहीं शिक्षित इलीट वर्ग की भाषा जिसमें अंग्रेजी, उर्दू और हिंदी के कसाव को महसूस किया गया है| मृदुला गर्ग स्त्री के बोल्ड रूप

को दिखाने के लिए एक सफल लेखिका मानी गई हैं| इनके लेखन की भाषा का भी अपना एक ढ़ंग है| इन्होंने भी एक से अधिक भाषा का प्रयोग किया है| इनकी स्त्रियों की भाषा से उनके सशक्त रूप को भी समझने में आसानी होती है| सभी लेखिकाओं ने अपने उपन्यास में मुहावरे और लोकोक्तियों का प्रयोग किया है, लेकिन 'मिलजुल मन' में लेखिका ने एक ही मुहावरे का कई प्रसंग में प्रयोग किया है जो बिलकुल भी अतार्किक नहीं लगता हर सन्दर्भ में उसकी नई व्याख्या लेखिका के लेखन कौशल को दर्शाता है| भाषा पर इतनी गहरी पकड़ देखते ही बनता है| चित्रा मुद्गल की भाषा परिपक्वता को उनके इस उपन्यास 'नाला सोपारा' की पत्रात्मक शैली से समझ सकते हैं| इनका यह प्रयोग साहित्य को और समृद्ध करता है| इनके लेखन की भाषा में प्रदेश के संस्पर्श की खूबसूरती देखते ही बनती है|

सभी लेखिकाओं ने सामाजिक यथार्थ को जिस सुन्दर भाषिक संवेदना के साथ अनेक अर्थ छवियों में अन्वेषित की हैं, अतुलनीय है| आप सभी के लेखन का कैनवास बहुत विस्तृत है| इनके कथा लेखन के ताप से उत्पन्न ऊष्मा पाठक के अन्तर्मन् में उर्जा का संचार करती है| पितृसत्तात्मक परिधि को लाँघकर समय से आगे देखने की आपकी रचनाशीलता के माध्यम से आप सभी लेखिका को उनके लेखन के द्वारा समझने की समृद्धकारी अनुभव को यहाँ साझा किया गया है| आप सबके लेखन का अध्ययन करने के लिए यह शोध-प्रबंध एक विनीत प्रयास है|